Impact Factor 2.119 (2017)

Year 08 (02), Vol. XV
August 2017

ISSN-0976-8149
Approved by U.G.C.
Journal No. 48216

Manglam

Half Yearly Journal of Humanities & Social Sciences

मङ्गलम्

मानविकी एवं समाज विज्ञान की अर्द्धवार्षिक शोध-पत्रिका

A Peer Reviewed 'Refereed' Journal

भारत छोड़ो आन्दोलन की

75

वीं वर्षगाँठ

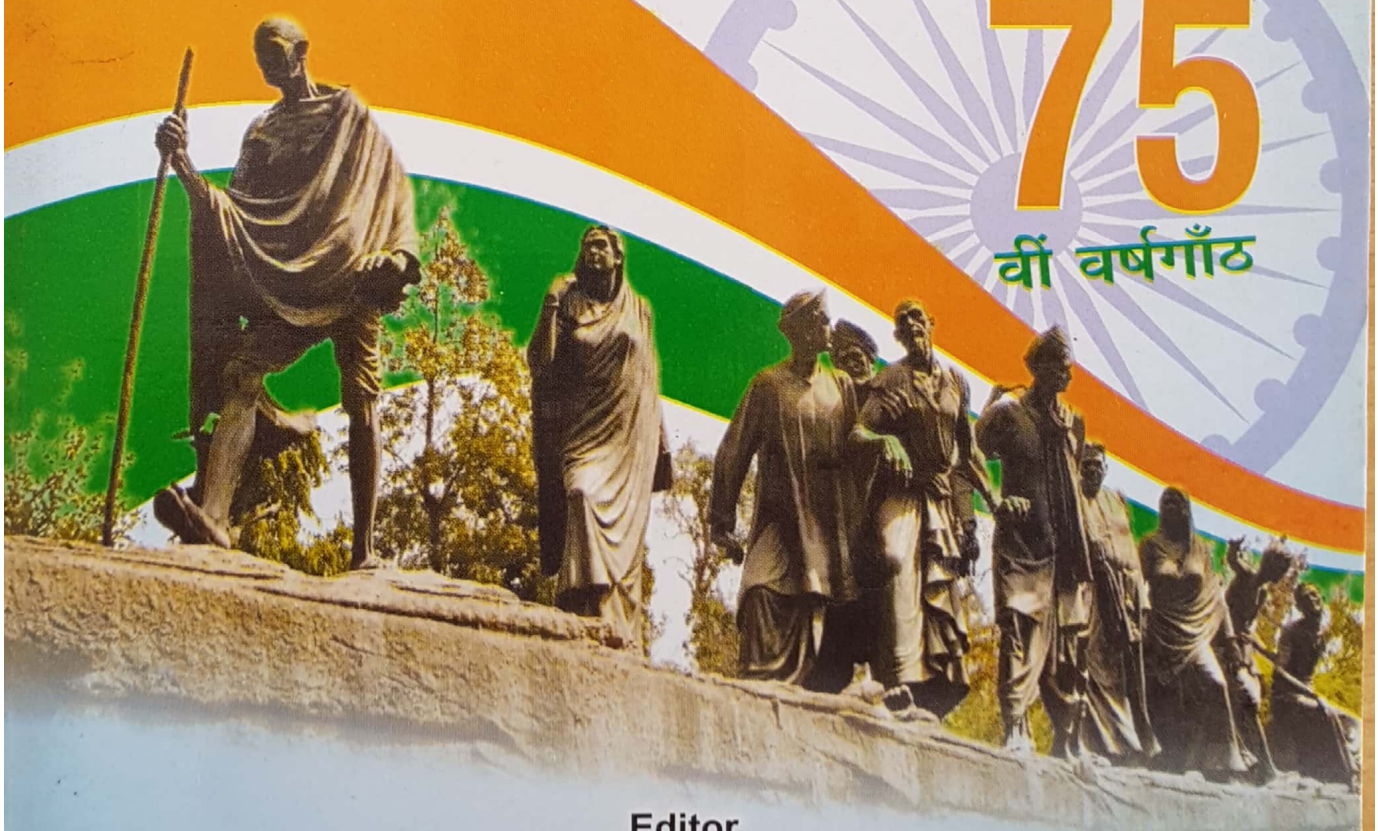

Editor
Dr. Dinkar Tripathi

Scanned by CamScanner

मङ्गलम् -वर्ष 08 (02) भाग-XV, अगस्त 2017
ISSN-0976-8149 पृ.-139-141

युवा सशक्तीकरण, समस्याएं एवं चुनौतियां- बेरोजगारी के सन्दर्भ में

*डॉ० रीतू शाही **
*डॉ० शेखर सिंह ***

पाषाणकाल से आरम्भ हुई मानव की विकास यात्रा आज उत्तर आधुनिक युग तक पहुंच चुकी है। जिसमें संचार प्रौद्योगिकी एवं वैश्वीकरण में विकास हो एक नई दिशा प्रदान की है। भारत भी इस प्रक्रिया का अग्रणी देश है। जिसने सभी क्षेत्रों में उल्लेखनीय प्रगति की है। भारत विश्व का सबसे बड़ा लोकतंत्र होने के साथ युवाओं का भी देश है। विश्व का सर्वाधिक युवा भारत में निवास करता है। किन्तु इसका एक दूसरा पक्ष यह भी है कि युवा शक्ति को रोजगार नही मिल रहा है। इससे अनेक सामाजिक आर्थिक चुनौतियां उत्पन्न होती है। इसकी इस दशा से केवल युवा ही प्रभावित नही होता बल्कि राज्य समाज और परिवार भी इससे प्रभावित होता है।

भारत सदियों तक साम्राज्यवाद और पूंजीवाद के अधीन रहा है। अतः बेरोजगारी के जड़े भी इतनी ही गहरी हैं। चन्द्रगुप्त मौर्य से लेकर अंग्रेजी शासन तक भारत में बेरोजगारी रही है। समय के साथ इसमें निरन्तर वृद्धि हुई है। तथा धीरे–धीरे इसने व्यापक रूप धारण कर लिया है। पिछले छः दशकों ने राजनेताओं राजनीतिक दलों व सरकारों के सुझाव में भविष्य का वायदा करते हुये शानदार अतीत का गुणगान किया है। लेकिन इन वायदों की हकीकत जुलाई 2015 की सामाजिक , आर्थिक, जातिगत जनगणना की आन्तरिक रिपोर्ट में सामने आई है। जो गरीबी और अभाव(बेरोजगारी) की ऐसी तस्वीर पेश करती है। जो विस्तार अथवा आकार के लिहाज से चौकाने वाली है। ग्रामीण भारत के 35.73 प्रतिशत से ज्यादा लोग निरक्षर है। ग्रामीण भारत में निरक्षक लोगों की संख्या लगभग 21.6 करोड़ है। जो युवाओं के सशक्तीकरण तथा रोजगार में बहुत बड़ी समस्या एवं चुनौती है। भारत की कुल आबादी का 1/3 से अधिक भाग ऐसा है जो विकास की इस प्रक्रिया से कोशो दूर है। आज भी जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति नही हो पा रही है।

बेराजगारी का सामान्य अर्थ है कि बेरोजगारी वह दशा है जिसमें एक व्यक्ति कार्य करने के योग्य हो तो भी तो वर्तमान प्रचलित मजूदरी का दर पर कार्य करने के लिए उत्सुक है फिर भी उसे कार्य नही मिलता है। युवा बेरोजगारी की समस्या में निरन्तर वृद्धि हो रही है जो निम्नलिखित रूपों में देखने को मिल रही है।

शैक्षणिक बेरोजगारी - शैक्षणिक बेरोजगारी इसलिए होती है कि शिक्षा अधिकांशतः रोजगार से जुड़ी नही होती है। कोठारी आयोग (1964–66) जर्नल ग्रामीण विकास 1975 में यह स्वीकार किया था कि वर्तमान शिक्षा के विषयों और राष्ट्रीय विकास के लक्ष्यों के बीच एक चौड़ी खाई है। 2011 की जनगणना के अनुसार 2001 से 2011 के

**असिस्टेंट प्रोफेसर राजनीति विज्ञान,आर०एम०पी०(पी०जी०कालेज,सीतापुर) (उ०प्र०)*
***असिस्टेंट प्रोफेसर राजनीति विज्ञान,दीन दयाल उपाध्याय राजकीय महाविधालय,सीतापुर(उ०प्र०)*

Scanned by CamScanner